महबूब खान की फिल्मों में सामाजिक-सरोकार, विशेष सन्दर्भ : औरत, रोटी, अनमोल घड़ी एवं मदर इंडिया फिल्म।

शोध-सारांश

भारत में बोलती फिल्मों का आगमन हो चुका था, फिल्मों के प्रति दीवानगी अब युवाओं में दिखने लगी थी। ऐसे में एक तत्पर युवा फिल्म के क्षेत्र में आता है और अपनी फिल्मों में भव्यता और आधुनिकता के साथ-साथ सामाजिक-समस्या का चित्रण करके, फिल्म की मुख्यधारा और यथार्थ दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। महबूब के बारे में बात करते हुए यह बात स्पष्ट है कि एक फिल्मकार के रूप में वे सिनेमा को एक पारदर्शी माध्यम मानते थे, उनके अनुसार सिनेमा को बंधनों में नहीं बांधा जाना चाहिए। वे हमेशा यही कहते कि फिल्म द्वारा कोई सन्देश देना चाहिए। महबूब खान की आदर्श और साहसिक फिल्म 'मदर इंडिया' सहित अन्य फ़िल्में, भारतीय सिनेमा के इतिहास को पूर्ण रूप से गढ़ती है। महबूब खान पर शोध करते हुए, एक शोधार्थी की भूमिका में मैंने उनके सिनेमा के प्रति समर्पण और साहस को महसूस किया है। महबूब किसी चीज़ की परवाह किये बिना ही दांव लगाने को तैयार रहते थे। वे हमेशा अपने दिल की सुनते। इस दौरान जब मैं मुंबई स्थित फिल्म-केंद्र 'महबूब स्टूडियो' गया तब पहली बार मुझे ऐसा लगा कि वहां की दीवारें और गलियारा मुझे बिना देर किये कोई बड़ा किस्सा सुनाना चाहती है।

"मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है, वही होता है जो मंजूर-ए-खुदा होता है।"

यह वाक्य न केवल महबूब के जीवन का महान सत्य है बल्कि यह उनके कर्म के प्रति विश्वास को भी दर्शाता है जो उनकी फिल्मों को ऊंचाई पर ले जाती है। महबूब बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, उनका विश्वास था की ऊपर वाले की इच्छा और आपकी मेहनत ही अंततःआपके भाग्य को बदल सकती है।

सन 1906 में गुजरात के बरोदा के पास के एक छोटे से गाँव में जन्में महबूब एकदम साधारण जीवन-शैली में पले-बढे, उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा तक नहीं ली। वे मिट्टी से जुडाव रखने वाले साधारण युवक थे, वे इस बात से अनजान थे कि कोई कैसे बड़ा बनता है लेकिन उनके सिनेमा के प्रति आकर्षण ने उन्हें लगातार कदम-ताल बढ़ाते रहने के लिए विवश किया। वे कभी पास के शहर सिनेमा देखने जाते तो कभी मुंबई आकर लौट जाते।

महबूब खान एक अभिनेता बनना चाहते थे लेकिन वे जानते नहीं थे कि कैसे? इसी सोच में आकर 16 वर्ष की उम्र में वे ट्रेन में चढ़ गए और उन्होंने वापस ना आने का भी इरादा कर लिया था। लेकिन उनके पिताजी उन्हें खोज कर वापस गाँव ले आये। अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक बार

फिर 23 की उम्र में महबूब बॉम्बे आये, उस समय उनके जेब में मात्र तीन रूपये था। मुंबई पहुंचकर महबूब ने ज्योति स्टूडियो के आस-पास अपना समय बिताना शुरू किया ताकि उन्हें फिल्म-सेट पर कुछ तो काम मिल जाये। रात में वे रेलवे स्टेशन पर और सोते दिन में स्टूडियो के बाहर चक्कर काटते। अंततः उन्होंने स्टूडियो के गार्ड को मना लिया और फिर फिल्मकार आर्देशर ईरानी को भी प्रभावित करके उनके फिल्म में बतौर एक्स्ट्रा आर्टिस्ट का काम उन्हें मिला। महबूब ने एक्स्ट्रा आर्टिस्ट केरूप में काम किया फिर जुनिएर आर्टिस्ट से होकर सहायक कलाकार का काम उन्हें मिला, यह मुकाम उन्हें लगन और मेहनत के बल पर मिलती गई। आर्देशर ईरानी ने उन्हें '*आलम आरा'* में मुख्य अभिनेता के रूप में लेने का मन बना लिया था लेकिन इतनी बड़ी और महँगी फिल्म में किसी नए अभिनेता को लेना उन्हें जोखिम भरा लगा इसलिए उनकी जगह एक स्थापित कलाकार को लिया गया, यह फिल्म भारत की पहली बोलती फिल्म थी। महबूब को जल्द ही आभास हो गया कि उन्हें फिल्मों में अभिनेता के रूप में नहीं बल्कि कुछ और काम करना चाहिए। अब उन्होंने पटकथा लिखनी शुरू की और उसे अलग-अलग स्टूडियो में लेकर जाने लगे। कई बार नकारे जाने के बाद सागर फिल्म्स को उनकी स्क्रिप्ट अच्छी लगी और फरदून ईरानी के कहने पर महबूब को उनकी पहली फिल्म *'अल हिलाल'* निर्देशित करने का मौका मिल गया। *अल हिलाल* (1935), सेसिल डी मिल की 'द साईन ऑफ़ द क्रॉस' से प्रेरित थी। *अल हिलाल* को जबरदस्त कामयाबी मिली और महबूब के काम को बहुत सराहा गया।

महबूब लगातार काम करते गए और आगे बढ़ते गए। *औरत* (1940) जैसी निर्भीक गाथा, *अंदाज़* (1949) के रूप में रोमांटिक कहानी, साहसिक और संगीतमय फिल्म *आन* (1951) एवं *मदर इंडिया* (1957) जैसी महान फ़िल्में बनाकर वे मील के पत्थर बन गए। 'व्यावसायिकता और कलात्मकता' की संतुलित रचनाए उनकी फ़िल्में, उन्हें उस समय के अग्रणी फिल्मकार के रूप में स्थापित करती है। महबूब की उत्कृष्ट फिल्मों में साहसी महिला नायक है और महबूब कभी भी एक औरत को नायक बनाने से हिचके नहीं।

महबूब खान ने स्पॉट बॉय से होते हुए एक्टिंग, लेखन, डायरेक्शन और फिर प्रोड्यूसर तक का मुकाम हासिल किया, उनके इस उपलब्धि का पूरा श्रेय उन्हें खुद जाता है। सन 1952 में महबूब ने 'महबूब स्टूडियो' स्थापित किया और उस समय बॉलीवुड को हॉलीवुड के स्तर का पहला स्टूडियो मिला। महबूब स्वयं हॉलीवुड से प्रभावित फिल्मकार थे लेकिन उन्हें हमेशा अपनी जमीन पर ही रहकर काम करना पसंद था और यह उनकी फिल्मों में दिखता है।

महबूब स्टूडियो में आज भी फ़िल्में शूट होती है, यहाँ के साउंड स्टूडियो, स्टेज और जनरेटर फिल्मकारों के लिए किराये पर उपलब्ध होते है। महबूब ने अपनी अगली पीढ़ी को विरासत में इस स्टूडियो के साथ वह साहस भी दिया है जो उनमें था और इस वजह से ही महबूब स्टूडियो आज भी

स्थापित है। पिछले 60 वर्षों में लगभग सभी अभिनेता,अभिनेत्री, निर्देशकों और लेखकों ने कभी न कभी इस पवित्र स्थान (महबूब स्टूडियो) में आकर अपनी कहानी कही होगी। आग, मुकदमे, ऋण, विवादों और छह दशक बीत गए लेकिन 100 हिल रोड और उसके निर्माणकर्ता, धरतीपुत्र 'महबूब खान' की लोकप्रियता बनी हुई है।

****